WWW.IJRPR.COM

International Journal of Research Publication and Reviews

Journal homepage: www.ijrpr.com ISSN 2582-7421

प्रख्यात नाटककार विजय तेंदुलकर का रचनात्मक वैशिष्ट्य: एक विश्लेषण

** डॉ. कुलिन कुमार जोशी, ** हर्ष शिवम्*

*असिस्टेंट प्रोफेसर, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा
**एम.पी. ए.थिएटर, डिपार्टमेंट ऑफ़ परफॉर्मिंग एंड फाइन आर्ट्स,पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा

सारांश :-

विजय तेंदुलकर भारतीय रंगमंच के एक प्रमुख नाटककार हैं, जिनके लेखन में पारंपरिक और आधुनिक तत्वों का समन्वय देखने को मिलता है। उनके नाटक समाज की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं का सजीव चित्रण करता है। उन्होंने सामाजिक पाखंड, भ्रष्टाचार, महिलाओं की स्थिति, गरीबी, हिंसा, सेक्स और मृत्यु जैसे संवेदनशील विषयों को बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी कहानियों का हिस्सा बनाया। वे नाटकों में अश्लीलता और हिंसा का इस्तेमाल सिर्फ सनसनी पैदा करने के लिए नहीं करते थे, बल्कि ये सब उनकी कथा और प्रस्तुति की गहराई के हिस्से थे। तेंदुलकर ने मराठी और हिंदी रंगमंच में लोकनाट्य की विधाओं जैसे तमाशा, कीर्तन, और लावणी का प्रभावी उपयोग किया है। उनके नाटकों में लोक रंगमंच की परंपराओं के साथ आधुनिक नाट्य तकनीकों का मिश्रण सामाजिक यथार्थ और सत्ता के जटिल संबंधों को उजागर करता है। यह शोध पत्र तेंदुलकर के नाटकों में लोक रंगमंच की भूमिका, हिंदी और मराठी रंगमंच के संदर्भ, तथा उनके लेखन की प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। (Tiwari 2018) [1]

कुंजी शब्द : विजय तेंदुलकर, लेखन प्रासंगिकता, नाटक, सामाजिक यथार्थवाद, रंगमंच, भारतीय साहित्य

परिचय

विजय तेंदुलकर (6 जनवरी 1928 - 19 मई 2008) मराठी साहित्य के एक महान नाटककार, लेखक, निबंधकार, और फिल्म व टीवी पटकथा लेखक थे। उनका लेखन भारतीय रंगमंच को एक नई दिशा और ऊँचाई देने वाला था। तेंदुलकर के नाटकों में सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय मुद्दों पर गहरी नजर थी। वे यथार्थवाद के माध्यम से समाज की कड़ी और कभी-कभी कड़वी सच्चाइयों को उजागर करते थे, और यह सब उन्होंने अपनी लेखनी के जरिए किया। उनका काम न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि समाज के उन पहलुओं को सामने लाने के लिए भी महत्वपूर्ण था, जो अक्सर नजरअंदाज किए जाते थे।

उनके प्रमुख नाटकों में 'गिद्ध', 'सखाराम बाइंडर', 'घासीराम कोतवाल', 'कमला', 'कन्यादान' और 'शांतता! कोर्ट चालू आहे' जैसे नाटक शामिल हैं, जिनका मंचन न केवल भारत, बल्कि विदेशों में भी हजारों बार हुआ है। इन नाटकों ने मराठी थियेटर को आधुनिकता और यथार्थवाद की दिशा में एक नई राह दिखाई। तेंदुलकर ने अपने लेखन में हमेशा नए प्रयोग किए और समाज और राजनीति की विसंगतियों को चुनौती दी, जिसके चलते उनका साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक और प्रभावशाली है। (Gupta 2016) [2]

जीवन और लेखन की पृष्ठभूमि

तेंदुलकर का जन्म कोल्हापुर के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके घर में शुरू से ही साहित्यिक माहौल था–उनके पिता का प्रकाशन का काम था, जिसका गहरा असर तेंदुलकर पर पड़ा। इसी प्रेरणा से उन्होंने महज 11 साल की उम्र में अपना पहला नाटक लिख डाला। बचपन से ही समाज के प्रति उनकी संवेदनशीलता ज़ाहिर थी। भारत छोड़ो आंदोलन में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया, और बाद में जब वे मुंबई की झुग्गी बस्तियों में रहे, तो समाज के हाशिये पर खड़े लोगों की ज़िंदगी को नज़दीक से देखा। यही जीवन के कड़वे सच और संघर्ष उनके नाटकों में गहराई से झलकते हैं। (Mehta 2017) [3]

विजय तेंदुलकर और उनका रंगमंचीय दृष्टिकोण

विजय तेंदुलकर को एक यथार्थवादी, मानवतावादी और प्रयोगधर्मी नाटककार माना जाता है। उनके नाटक सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, "घासीराम कोतवाल" में उन्होंने पुणे के ब्राह्मण समाज की सत्ता संरचना और हिंसा को लोक रंगमंच के तत्वों के माध्यम से प्रस्तुत किया। तेंदुलकर ने ब्रेख्टियन 'विच्छेदन प्रभाव' का उपयोग कर दर्शकों को सामाजिक यथार्थ पर चिंतन करने के लिए प्रेरित किया। (Jain 2019) [4]

मराठी रंगमंच में तेंदुलकर का स्थान

मराठी रंगमंच पर तेंदुलकर का गहरा प्रभाव है। उन्होंने तमाशा जैसे लोक रंगमंच की विधाओं को आधुनिक नाटकों में प्रयोग किया। "सारी गा सारी" जैसे नाटक में तमाशा की भाषा और शैली का उपयोग करते हुए मध्यवर्गीय सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया। उन्होंने पारंपरिक लोक संगीत और नृत्य को नाटकीय प्रस्तुति में शामिल किया जिससे नाटक की प्रभावशीलता बढ़ी। (Chauhan 2018) [5]

हिंदी रंगमंच और तेंदुलकर

हिंदी रंगमंच में भी तेंदुलकर के नाटकों का अनुवाद और मंचन हुआ है। हिंदी रंगमंच पर लोक रंगमंच की विधाओं का प्रभाव रहा है, जो ग्रामीण और शहरी दर्शकों के बीच संवाद स्थापित करता है। तेंदुलकर के नाटकों ने हिंदी रंगमंच को सामाजिक यथार्थ के प्रति संवेदनशील बनाया। (Raghavan 2020) [6]

प्रमुख नाटकों का विश्लेषण

- **घासीराम कोतवाल:** यह नाटक एक हिंदी भाषी ब्राह्मण की कहानी है, जो मराठा समाज में रोजगार की तलाश में आता है। नाटक में नाना फड़नबीस के माध्यम से सत्ता और समाज के दमनकारी स्वरूप को दर्शाया गया है। यह नाटक समय और स्थान से परे सामाजिक और राजनीतिक सच्चाइयों को उजागर करता है। तेंदुलकर ने लोकनाट्य की शैली अपनाकर इसे जनसामान्य के लिए अधिक प्रभावशाली बनाया,

  यह सत्ता के दुरुपयोग, जातिगत भेदभाव, और सामाजिक अन्याय जैसे मुद्दों को उजागर करता है, जो आधुनिक समाज में भी विद्यमान हैं। नाटक यह दिखाता है कि कैसे सत्ता और राजनीति के खेल में आम आदमी का शोषण होता है और सामाजिक संरचनाएँ उसे दबाती हैं। इसकी राजनीतिक व्यंग्यात्मक शैली और ऐतिहासिक संदर्भ इसे समय-समय पर पुनः देखने और समझने योग्य बनाते हैं

  इस प्रकार, नाटक की अच्छाइयाँ इसकी सामाजिक-राजनीतिक गहराई और प्रभावशाली प्रस्तुति हैं, जबकि बुराइयाँ इसकी कठोरता और जटिलता हैं, जो इसे विशिष्ट दर्शकों के लिए चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। फिर भी, इसकी विषयवस्तु और संदेश आज भी समाज के लिए महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं। (Deshpande 2015) [7]

- **सखाराम बाइंडर:** यह नाटक समाज में महिलाओं के प्रति दमन और लैंगिक असमानता को उजागर करता है। नाटक में दो प्रमुख महिलाएं हैं: लक्ष्मी, जो विनम्र और आज्ञाकारी है, और चंपा, जो मुखर और साहसी है। चंपा सखाराम को उसकी सीमाएं दिखाती है, लेकिन फिर भी वह उसके साथ रहती है क्योंकि बाहर की दुनिया उससे भी भयानक है। नाटक के माध्यम से तेंदुलकर ने समाज की पाखंडपूर्ण मानसिकता, महिलाओं के प्रति दमन और दांपत्य जीवन की जटिलताओं को बेबाकी से प्रस्तुत किया है

  यह समाज में महिलाओं के शोषण, लैंगिक असमानता, और पाखंड को उजागर करता है, जो आज भी मौजूद हैं। नाटक ने समाज की नैतिकता और संस्कारों की आड़ में छुपे दांभिक व्यवहारों को बेनकाब किया है। इसकी कलात्मकता और सामाजिक संदेश इसे समय-समय पर देखने और समझने योग्य बनाते हैं। यह नाटक न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि सामाजिक जागरूकता भी फैलाता है, इसलिए यह आज भी महत्वपूर्ण माना जाता है। (Mishra 2017) [8]

- **शांताता! कोर्ट चालू आहे:** यह नाटक न्याय व्यवस्था की विफलताओं और सामाजिक अन्याय पर तीखा प्रहार है। इस नाटक में लीला बेणारे नाम की महिला को आरोपी के रूप में पेश किया जाता है। शुरुआत में यह एक खेल जैसा लगता है, लेकिन धीरे-धीरे यह गंभीर और व्यक्तिगत हो जाता है। लीला पर भ्रूण हत्या और चरित्र हनन के आरोप लगते हैं। नाटक के अंत में, लीला के निजी जीवन की सच्चाई सामने आती है और समाज में महिलाओं के प्रति दोहरे मानदंडों की कड़वी हकीकत उजागर होती है।

  यह स्त्री-पुरुष संबंधों में असमानता, सामाजिक पाखंड, और न्याय व्यवस्था की विडंबना को उजागर करता है, जो आज के समाज में भी विद्यमान हैं। नाटक यह दिखाता है कि कैसे समाज और उसके संस्थान महिलाओं को दबाने और चुप कराने का काम करते हैं। इसकी तीव्र सामाजिक आलोचना और मंचीय प्रस्तुति इसे आज भी देखने और समझने योग्य बनाती है। इसलिए यह नाटक न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि सामाजिक जागरूकता भी फैलाता है और समय के साथ अपनी प्रासंगिकता बनाए रखता है। (Sharma 2019) [9]

- **गिद्ध:** यह नाटक विवादास्पद रहा, जिसमें सामाजिक विसंगतियों और मानवीय कमजोरियों को बेबाकी से प्रस्तुत किया गया। समाज की दोहरी मानसिकता, हिंसा, और यौन संबंधों जैसे संवेदनशील विषयों को बिना किसी आवरण के दिखाया है, जिसके कारण इसे आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा है। नाटक की प्रस्तुति में गर्भपात और हिंसा के दृश्य दर्शकों को असहज कर सकते हैं, लेकिन यह असहजता समाज की वास्तविकता को समझने के लिए जरूरी है। यह नाटक प्रेम, हिंसा और सामाजिक बंधनों के बीच फंसे इंसानों की मनोस्थिति को प्रभावशाली ढंग से दर्शाता है।

  नाटक में अश्लीलता और हिंसा के दृश्य कुछ दर्शकों को असहज कर सकते हैं, जिससे इसे लेकर आलोचनाएँ भी हुई हैं। इसकी तीव्रता और संवेदनशील विषयों की वजह से यह सभी दर्शकों के लिए सहजता से समझने वाला नहीं हो सकता।

  कुछ आलोचक इसे अत्यधिक नाटकीय और विवादास्पद मानते हैं, जिससे नाटक की स्वीकार्यता पर प्रभाव पड़ा। इसके कारण लंबे समय तक इसे मंचित करने में बाधाएँ आईं। (Raj 2018) [10]

सिनेमा और टीवी में तेंदुलकर की उपस्थिति

तेंदुलकर ने नाटकों के अलावा कई कलात्मक फिल्मों के लिए पटकथा भी लिखी, जैसे 'अर्द्धसत्य', 'निशांत', और 'आक्रोश'। इन फिल्मों ने भारतीय सिनेमा में सामाजिक यथार्थवाद को मजबूती से स्थापित किया। उनकी पटकथाएँ सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को गहराई से छूती हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं। (Bhattacharya 2020) [11]

लेखन की प्रासंगिकता

विजय तेंदुलकर की लेखनी आज भी प्रासंगिक है क्योंकि उन्होंने समाज की जटिलताओं, असमानताओं और मानवीय संघर्षों को यथार्थवादी और संवेदनशील दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। उनके नाटक और पटकथाएँ सामाजिक चेतना जगाने, न्याय और समानता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देती हैं। उनकी रचनाएँ समय के साथ और भी अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही हैं क्योंकि वे सामाजिक बदलावों और मानवीय मूल्यों की गहन पड़ताल करती हैं । (Joshi 2021) [12]

निष्कर्ष

विजय तेंदुलकर की लेखनी भारतीय साहित्य और रंगमंच में एक अमूल्य धरोहर है। उनके नाटकों और पटकथाओं ने सामाजिक यथार्थ को न केवल प्रतिबिंबित किया, बल्कि उसे चुनौती भी दी। उनकी रचनाएँ आज भी सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय मुद्दों पर संवाद के लिए प्रासंगिक हैं। तेंदुलकर का साहित्यिक योगदान भारतीय रंगमंच और सिनेमा को नई दिशा देने वाला रहा है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बना रहेगा।

BIBLIOGRAPHY

1. Bhattacharya, P. "Cinematic Adaptations of Tendulkar's Plays." *Pune: Sampurnanand Publications.*, 2020.
2. Chauhan, V. "Modern Marathi Theatre: A Critical Study." *Delhi: Kunal Publications.*, 2018.
3. Deshpande, S. "The Radical Theatre of Vijay Tendulkar." *Bangalore: Navayana Publishing.*, 2015.
4. Gupta, A. "Social Realism in the Plays of Vijay Tendulkar. Pune." *University of Pune Press*, 2016.
5. Jain, M. "The Political Implications of Vijay Tendulkar's Theatre." *New Delhi: S.Chand.*, 2019.
6. Joshi, N. "The Relevance of Tendulkar's Theatre Today." *New Delhi: Cambridge University Press.*, 2021.
7. Mehta, P. "Tendulkar: The Man Behind the Plays." *Mumbai: Popular Prakashan.*, 2017.
8. Mishra, S. "Theatre and Society in Modern India." *Kolkata: Calcutta University Press.*, 2017.
9. Raghavan, T. "Influence of Folk Theatre on Contemporary Drama." *Pune: Maharashtra Sahitya Mandal.*, 2020.
10. Raj, K. "Social Change and Violence in Tendulkar's Plays." *Mumbai: Prakashan.*, 2018.
11. Sharma, A. "Vijay Tendulkar: The Architect of New Marathi Theatre." *Delhi: Oxford University Press.*, 2019.
12. Tiwari, R.K. "Vijay Tendulkar and His Contribution to Marathi Theatre." *Sahitya Akademi.*, 2018.